# सरस्वती,
## वाणी और ज्ञान, संगीत और कला की देवी

### ईशा सरदेसाई द्वारा परिचय

सम्पूर्ण इतिहास में और विश्व की सभी संस्कृतियों में, लोगों में यह जानने की उत्सुकता रही है कि *और क्या* है जिसका अस्तित्व है। ओस की एक बून्द के अन्दर और क्या है जिसका अस्तित्व है? एक पत्ती की शिराओं में या रेत के कणों में और किसका अस्तित्व है? वे जीवन के इन रहस्यों में और भी गहरे उतरना चाहते हैं जिससे वे यह पता लगा सकें कि उसके अन्दर क्या है; उसके पीछे क्या है; उसके परे क्या है; वह क्या है जो हरेक चीज़ को स्पन्दनशील बना रहा है। वे जानना चाहते हैं और फिर वे उसके परे जाना चाहते हैं।

जब भी पुरातत्त्ववेत्ताओं ने ज़मीन को खोदकर उसका शोध किया है तो हमेशा उन्हें पूजा व आराधना के लेख और अवशेष मिले हैं। बार-बार, उनकी खोज ने यही प्रमाणित किया है कि प्राचीन से भी प्राचीन सभ्यताओं में भी लोग इस ब्रह्माण्ड के रहस्य को जानने के लिए लालायित रहते थे व उसे ढूँढ़ते थे। उनकी ललक और खोज उन्हें कई प्रकार के देवी-देवताओं के अभिज्ञान तक ले गई। इन देवी-देवताओं के पास असाधारण शक्तियाँ थीं और आशीर्वाद प्रदान करने की सामर्थ्य थी।

भारत में, ऋषि-मुनियों और द्रष्टाओं ने शास्त्रों में इन देवी-देवताओं के विषय में लिखा है। वे समझाते हैं कि देवी और देवता निराकार को आकार प्रदान करते हैं, वे असंख्य व सुन्दर रूपों में उसे प्रकट करते हैं जो अतीन्द्रिय और अलौकिक है, अनिर्वचनीय है, वर्णन के परे है। ऋषि-मुनियों और द्रष्टाओं ने अपने दृष्टान्तों को मूर्तियों के रूप में अभिव्यक्त किया, जिन्हें बाद में प्रासादों में प्रतिष्ठापित किया गया और इन प्रासादों को मन्दिर कहा गया। उन्होंने प्राणप्रतिष्ठा की अर्थात् मूर्तियों में प्राण को, उस जीवन-शक्ति को प्रतिष्ठापित किया जो मन्त्रों की शक्ति से व्याप्त होती है। जब लोगों ने इन मूर्तियों की शक्ति का अनुभव किया तो उन्होंने इन देवी-देवताओं के चित्रों और छवियों को बनाया जिन्हें वे अपने घरों में भी स्थापित कर सकें।

प्रत्येक देवी या देवता, भगवान के उन विशिष्ट गुणों को दर्शाते हैं जिनकी अनुभूति ऋषि-मुनियों और द्रष्टाओं को अपने ध्यान व तपस्या द्वारा हुई। जब किसी उपासक को यह पता होता है कि कोई विशिष्ट देवी या देवता किस गुण के प्रतीक हैं, तो उसे अपनी प्रार्थनाएँ अर्पित करने हेतु एक स्पष्ट और विशिष्ट दिशा मिलती है तथा अपनी कृतज्ञता अर्पित करने का एक लक्ष्य भी प्राप्त होता है। देवी-देवता, लोगों के लिए भगवान को और भी अधिक सुलभ व सुपरिचित बनाते हैं; वे उपासकों

को यह विश्वास दिलाते हैं कि *हाँ,* उपासकों में निश्चित ही वह शक्ति *है* कि वे अपने अन्दर दिव्यता का आवाहन कर सकते हैं। और जब देवी-देवता उपासकों को अपने दर्शन देते हैं तो इससे उपासकों की भगवान में श्रद्धा और भी दृढ़ हो जाती है, और इस बात पर भी दृढ़ विश्वास होता है कि भगवान को जाना जा सकता है।

एक देवी, जिनकी भारतीय ग्रन्थों में बारम्बार स्तुति की जाती है, वे हैं देवी सरस्वती। श्रीसरस्वती इस ब्रह्माण्ड की सृजनात्मक शक्ति को दर्शाती हैं। वे वाणी की, शब्दों की और शब्दों में निहित प्रज्ञान की देवी हैं। वे नाद व संगीत की देवी हैं, और वे कला की देवी हैं।

'सरस्वती' नाम के दो भाग हैं : 'सरस्' और 'वती।' 'सरस्' का शाब्दिक अर्थ है, 'स-रस' या 'रस सहित अथवा रसयुक्त या रसमय।' 'वती' अर्थात् वे जो इस रस की मूर्तरूप हैं। अतः 'सरस्वती' वे हैं जो जीवन के सभी रसों की मूर्तरूप हैं।

'सरस्वती' शब्द का उपयोग बहते हुए जल को दर्शाने के लिए भी किया जाता रहा है जो इस ग्रह पर जीवन को बनाए रखता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि 'सरस्वती' में निहित शब्द 'रस' की दो परिभाषाएँ हैं। यह रस को दर्शाता है, उदाहरण के लिए, शब्दों और भाषा का रस या नादों और संगीत का रस। और साथ ही इसका अर्थ है, 'अर्क या सार', 'द्रव' या 'जीवनदायी जल।' देवी सरस्वती और उनकी शक्ति के सन्दर्भ में अकसर बहते हुए जल की कल्पना की जाती है। उदाहरण के लिए, ग़ौर करें, लोग प्रायः अपनी निरन्तरता से होने वाली रचनात्मक प्रेरणा की अनुभूतियों का वर्णन किस प्रकार करते हैं—वे 'प्रवाह' कहकर इसका वर्णन करते हैं।

भारत में अलग-अलग स्थानों पर देवी सरस्वती को भिन्न-भिन्न रूपों में चित्रित किया जाता है या दर्शाया जाता है। उनके रूप में, उनकी मुद्रा में, उनके आभूषणों में विविधता होती है। सिद्धयोग पथ पर, देवी सरस्वती की आराधना उस रूप में की जाती है, जिस रूप में वे उन व्यक्तियों के समक्ष प्रकट हुई हैं जिन्होंने अपने जाग्रत अन्तर-चक्षु द्वारा देवी सरस्वती के दर्शन किए हैं। वे दिव्य श्वेत-कमल पर गरिमामय रूप से आसीन हैं और विशिष्ट रूप से वे हल्के आसमानी नीले रंग की नदी के किनारे विराजमान हैं। वे अपने चारों हाथों में अपने आशीर्वादस्वरूप एक-एक वस्तु को धारण करती हैं। अपने दो हाथों से वे वीणा को धारण करती हैं जो एक सुमधुर तन्तुवाद्य है और सृजनात्मकता की शक्ति का प्रतीक है। उन्होंने जपमाला को भी धारण किया हुआ है जो मन्त्रजप की शक्ति की प्रतीक है। वे पुस्तक को धारण करती हैं जो उस ज्ञान को प्रदर्शित करता है जो वे प्रदान करती हैं। उनका वाहन 'हंस' है।

हम दिन-प्रतिदिन जिस प्रकार अपना जीवन जीते हैं और जिस तरह से इस ग्रह के और इसके वासियों के हित के लिए, उनकी ख़ुशहाली और प्रगति के लिए अपना योगदान देते हैं, उसमें देवी सरस्वती की शक्ति और उनके आशीर्वाद अभिन्न रूप से हमारे साथ होते हैं। जब हम अपने विचारों को हितकारी और मंगलकारी मार्गों पर निर्देशित करते हैं तब हम देवी सरस्वती के आशीर्वादों का ही आवाहन कर रहे होते हैं। जब हम सच्चाई से, मददपूर्ण रूप से, दयालुता से और उत्थानकारी तरीक़े से बात करते हैं तो हम उन्हीं की कृपा का आवाहन कर रहे होते हैं। जब हम ऐसा संगीत सुनते या बजाते हैं जो अन्तरंग के तारों को छेड़ देता है तो यह उनकी ही प्रेरणा होती है जो हमारे माध्यम से प्रवाहित होती है। जब हम कला से जुड़ते हैं या ऐसी कलात्मक रचना करते हैं जो किसी विशिष्ट चीज़ को व्यक्त करती है, जैसे कि कोई सद्गुण, कोई मनोभाव, जोकि हम सभी में विद्यमान हो तो यह देवी सरस्वती की ही उदारता है जिसका हमें लाभ मिलता है।

महासरस्वत्यै नमो नमः —देवी महासरस्वती को नमन!

©२०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।